शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय संस्कृति में देवालय प्रतीक
जैन संस्कृति के विशेष संदर्भ में

डॉ.पवन शुक्ला
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय संस्कृति में देवालयों का विशिष्ट स्थान है। भारतीय भक्ति साधना के विकास में इसका विशेष योगदान है। पाषाण मूर्तियों में प्राण-प्रतिष्ठा कर अपने जीवन को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने में और मनुष्यता के विस्तार में देवालय संस्कृति ने अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है। अपने दोषों के प्रक्षालन और चित्त शुद्धि के लिए मनुष्य ने स्वयं को इन देवालयों में समर्पित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में जैन संस्कृति के विशेष सन्दर्भ में देवालय संस्कृति पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

देवा-सुरेन्द्र-नर-नाग समर्चितेभ्यः
पाप-प्रणाशकर-भव्य-मनोहरेभ्यः।
घंटा-ध्वजादि-परिवार विभूषितेभ्यो,
नित्यं नमो जगति सर्व जिनालयेभ्यः।।

तत्त्वदर्शी, ज्ञानीजनों की प्रतिमा जहां पर विशेष विधि से प्राण प्रतिष्ठा (पंचकल्याणक) पूर्वक स्थापित होती है, उसे हम देवालय कहते हैं।1

भारतीय संस्कृति में देवालय का परमोच्च स्थान है। देवत्व के प्रगाढ निष्ठा और सम्मान की भावना देवभूमि भारत की प्राचीन परंपरा है। देवत्व का अर्थ है - विश्व कल्याण की भावना, जो सबके हित में अपने हितो को होम कर दे वह देव पुरूष है। देवत्व के प्रति श्रद्धा और पारस्परिक सद्भावना की प्रतीक के रूप में ही देवालय का निर्माण किया जाता है।2 देवालय का अर्थ है देव का निवास। दिव्+अच् से निर्मित देव शब्द का अर्थ दिव्य, स्वर्गीय, देवता, दिव्यपुरूष, ब्राह्मण, राजा आदि अनेक अर्थ हैं। 3 आ+ली+अच् से निर्मित आलय का अर्थ है- आवास, घर, आश्रय, आसन या जगह आदि है।4

जैन संस्कृति में देवालय

जैन मन्दिरों के संदर्भ में 'आयतन' शब्द का उल्लेख हुआ है। 'आयतन' का अस्तित्व तीर्थंकर महावीर के समय में भी था। विहार के समय विश्राम के लिए तीर्थंकर महावीर के यक्षायतनों में ठहरने के संदर्भ प्राप्त होते हैं।5 बाद में आयतन शब्द का प्रयोग जिनायतन के रूप में होने लगा। इसके बाद मंदिर, चैत्य, आलय, वसतिगृह आदि शब्दों ने इसका स्थान ग्रहण कर लिया।6 पद्मचिरत्र में राम व रावण द्वारा अनेक स्थलों पर जिन मंदिरों व प्रतिमाओं की स्थापना, पूजन एवं जीर्णोद्धार के उल्लेख हैं।7 आदिपुराण में जैन मंदिरों के लिए सिद्धायतन शब्द प्रयुक्त हुआ है।8 अमरकोष में आयतन और चैत्य का एक ही अर्थ बताया गया है।9 जैन आगम ग्रन्थों में चैत्य शब्द का प्रयोग देव मंदिर के लिए हुआ है।10 आदिपुराण में चैत्यवृक्ष के समीप जिन मंदिर के होने का उल्लेख हैं।11 पद्मपुराण में चैत्यालय को

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

महापवित्र बताया गया है। वस्तुतः जिनेन्द्रालय का वृहताकार ही चैत्यालय है।12 जिनेन्द्रालय के स्थान पर 'जिनवश्वम' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है।13

अर्हन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जैनधर्म, जैनआगम, चैत्यप्रतिमा, चैत्यालय (देवालय) इस प्रकार कुल नौ देवता जैन दर्शन में कहे गए हैं। जिन का अर्चन, पूजन, भजन, स्तवन, नित्य किया जाता है। ये पूज्य नौ देवता साक्षात् जहां विराजमान् रहते हैं, इनको समवषरण, मंदिर, चैत्यालय, देवालय, जिनमंदिर आदि अनेक शुभ नामों से जाना जाता है। साक्षात् नव देवों के अभाव में इनके प्रतिनिधि रूप, प्रतिमा (मूर्ति) जिन स्थानों में स्थापित की जाती है उस स्थान को भी जिन मंदिर, चैत्यालय आदि कहते हैं।14

देवालय में पूजन-अर्चन के माध्यम से चारों कषायों (क्रोध, लोभ, मन और माया) के शमन तथा पंचेन्द्रिय विषयों की तृष्णा का अभाव हो जाता है। कर्मो का प्रक्षालन करके अपनी आत्मा को पवित्र किया जाता है। जैन परंपरा में द्रव्य पूजा एवं भाव-पूजा का विधान है। वीतराग भगवान की पूजा की जाती है । उनके गुणों को मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं, जिसे जिनबिम्ब कहते हैं, जहां पर जिनबिम्ब अर्थात् मूर्ति स्थापित की जाती है उस स्थान को जिनालय, देवालय या मंदिर कहते हैं।15

'देवतायतनं कुर्याद धर्मार्थकाममोक्षदम्।'

देवालय बनाने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है।16

जैन संस्कृति में प्राचीन काल से ही देवालय निर्माण की सुदीर्घ परंपरा है। अनेक भव्य एवं प्राचीन मंदिरों में वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला का चरम उत्कर्ष दिखाई देता है। इसके अनेक श्रेष्ठ उदाहरण भारत में तो हैं ही विदेशों में भी हैं।

जैन संस्कृति में छह (देवपूजा, गुरूपास्ति, स्वाध्याय, संयम, तप, दान) आवश्यक कर्तव्यों में देवदर्शन पूजन का विधान है । देवालय अर्थात् जिनालय में अरंहत और सिद्ध परमेष्ठी की मूर्तियाँ विराजित रहती हैं। जैन संस्कृति में जिन मूर्ति की पूजा वस्तुतः उनके गुणराशि की पूजा है। मंदिर में प्रतिमाओं के दर्शन, पूजन से शुभ विचारों का विकास होता है और दैनिक जीवन में नवीन चेतना का संचार होता है।17

जिन देव की पूजा अष्टद्रव्य से की जाती है-जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप और फल ये अष्टद्रव्य आत्मविकास की भावना के प्रतीक है- ये उन्नति के आठ चरण हैं।

जल संगधप्रसूनसुतन्दुलैष्चरूप्रदीपक धूप फलादिभिः।
सकलमंगलवांछित-दायकान
परमविंषतितीर्थपतीन्यजे।।

ज्ञान का प्रतीक 'जल' जन्म-मरण से मुक्ति पाने के लिए चढाते हैं। 'चंदन' संसार ताप को शीतल करने के लिए अर्पित किया जाता है। 'अक्षत' अखण्डता और उज्ज्वलता का प्रतीक है, हमारा पुनर्जन्म न हो इस भावना से चढाया जाता है। कामदेव का प्रतीक 'पुष्प' ऐहिक वासनाओं के विसर्जन का और मुक्ति का प्रतीक है। 'नैवेद्य' तृप्ति का प्रतीक है, क्षुधा रोग के विनाश के लिए इसका अर्पण किया जाता है। 'दीपक' प्रकाश और ज्ञान का प्रतीक है, मोह रूपी अंधकार को शांत करने के लिए निर्मल आत्मबोध के लिए दीपक का अर्पण किया जाता है। 'धूप' अष्टकर्मो के नाश का प्रतीक है। 'फल' सुख का प्रतीक है, बीज का चरम विकास फल है, उसी प्रकार मानव जीवन

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

का चरम लक्ष्य मोक्ष है। इसलिए मोक्ष फल की प्राप्ति के लिए फल का अर्पण किया जाता है।

मंदिर में आराध्य प्रभु के प्रति विनय, श्रद्धा तथा शरणागति के भाव उत्पन्न होते हैं। मंदिर का शांत ऊर्जामय वातावरण मन की चंचल गति को स्थिरता देते हैं। अनायास ही हमारे मन में भगवान की भक्ति, अनुराग तथा उनके गुण ग्रहण करने की भावना होती है।18

निष्कर्ष

जैन संस्कृति में 'देवालय सरवशरण सभा का प्रतीक' है। इसमें समस्त सुर-असुर एवं तिर्यंच जीव आते हैं इसलिए गणधरों समवशरण जैसा सार्थक नाम दिया।19 समवशरण धर्मसभा का प्रतीक है, जहां सभी जीवों को समान रूप से शरण मिलती है तथा जहां तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि खिरती है, जिसमें सभी जीवों (पशु, पक्षी, मनुष्य और देव) को समान रूप से शरण मिलती है, जहां वे अपनी भाषा में तीर्थंकर के दिव्योपदेश को ग्रहण करते हैं।

इस प्रकार देवालय वह पावन स्थल है, जहाँ प्रतिमा के माध्यम से मौन उपदेश मिलता है। जहाँ सभी को समान रूप से आकर बैठने की, पूजा, स्वाध्याय आदि करने की अनुमति होती है। प्रत्येक जीव यहाँ आकर आत्म-शान्ति और आनंद की अनुभूति करते हैं और आत्मोन्नति का मार्गप्रशस्त करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. मंदिर-मुनि अमित सागर, प्रकाशक- पवन कुमार जैन, इंडिया हाऊस ब्लाक ए तीसरा तला, 69, गणेशचन्द्र एवेन्यु, कलकत्ता, पृष्ठ 13-14

2. भारतीय एवं जैन संस्कृति में देवालय का महत्व-कु.समता जैन (शिवपुरी), संस्कार सागर पत्रिका नवम्बर,2008 इंदौर, पृष्ठ 9

3. हिन्दी शब्दकोश- वामन शिवराम आप्टे, पृष्ठ 472

4. हिन्दी शब्दकोश-वामन शिवराम आप्टे, पृष्ठ 160

5. जैन महापुराण कलापरक अध्ययन, डॉ..कुमुद गिरी, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणासी, 1995, पृष्ठ 191

6. जैन कला और स्थापना भाग 3- अमलानंद घोष, नई दिल्ली,1975, पृष्ठ 461

7. पद्म चरित्र 37/61, 11/3

8. आदिपुराण-जिनसेनकृत, 4/94

9. चैत्यमायतनं तुल्ये, अमरकोश 2/2/7

10. जैन पुराणों का सांस्कृतिक अध्ययन-देवी प्रसाद मिश्र, पृष्ठ 269

11. आदिपुराण, जिनसेनकृत, 6/56

12. पद्मपुराण-आचार्य रविषेण, 18/58, 7/33, 33/21

13. पद्मपुराण, 28/10

14. जैन पूजा काव्य, एक चिन्तन- डॉ.दयानन्द जै, भारतीय ज्ञानपीठ 2013, पृष्ठ 65,66

15. संस्कार सागर पत्रिका, इंदौर, नवंबर,2008, पृष्ठ 10-11

16. प्रसाद मंडन-पं.भगवानदास जैन आचार्य ज्ञानसागर वागर्थ विमर्श केन्द्र, ब्यावर (राजस्थान),1997, पृष्ठ 4, श्लोक 12

17. जैन पूजा काव्य, एक चिन्तन-डॉ. दयानन्द जैन, भारतीय ज्ञानपीठ 2013, पृष्ठ 35

18. संस्कार सागर पत्रिका, इंदौर, नवंबर,2008, पृष्ठ 9-10

19. आदिपुराण, जिनसेनकृत, 35/63